प्रश्न सामाजिक मानवशास्त्र का अध्ययन-क्षेत्र स्पष्ट करें।

उत्तर आरम्भ में मानवशास्त्र का अध्ययन आदिवासियों के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक इत्यादि संगठनों के बारे में सुनी हुई बातों तक ही सीमित था। इन्हीं बातों के आधार पर मनुष्य के बारे में विकासवादी रूपरेखा तैयार की जाती थी। मानवशास्त्र के अन्तर्गत मनुष्य के सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक इत्यादि प्रत्येक पहलू को शामिल किया जाता है। दूसरे शब्दों में मानवशास्त्र मनुष्य की उत्पत्ति से लेकर आज तक उसके संबंध में जो कुछ भी विद्यमान है उसका अध्ययन करता है।

सामाजिक मानवशास्त्र का अध्ययन क्षेत्र निम्नलिखित भागों में विभाजित करके अध्ययन किया जा सकता है जो निम्नलिखित है:—

(1) मानव की उत्पति तथा विकास :—

मानवशास्त्र में उन सभी विषयों का अध्ययन किया जाता है जिसका संबंध मानव की उत्पति तथा विकास के विभिन्न स्तरों से है। मानव आज जिस रूप में है, वह आदि मानव की विशेषताओं से पूर्णतया भिन्न है। इस दृष्टिकोण से मानवशास्त्र ऐसे सभी विषयों का अध्ययन करता है कि मानव का जन्म कब कहाँ और किस रूप में हुआ। विभिन्न युगों में उसकी शारीरिक विशेषताएँ कैसी थी तथा किस-किस स्तरों से गुजरते हुए मानव ने वर्तमान स्वरूप प्राप्त किया।

(2) प्रजातीय अध्ययन :—

मानवशास्त्र के अध्ययन

क्षेत्र से संबंधित दूसरा प्रमुख विषय संसार में विभिन्न प्रजातियों के वितरण, प्रजातियों की शारीरिक विशेषताओं तथा उनके बीच पाई जानेवाली समानताओं और असमानताओं से संबंधित है। आज सम्पूर्ण विश्व की जनसंख्या अनेक प्रजातियों में विभाजित है तथा प्रत्येक प्रजाति की शारीरिक विशेषताएँ एक दूसरे से भिन्न है। मानवशास्त्र केवल इन प्रजातीय समूहों का वर्गीकरण ही नहीं करता बल्कि यह स्पष्ट करने का भी प्रयत्न करता है कि सभी प्रजातियों की उत्पत्ति एक ही आदि मानव से होने के बाद भी उनके बीच इतना अधिक पृथकता कैसे हो गया। प्रजातीय विभाजन के कारण वर्तमान विश्व में उत्पन्न होनेवाली समस्या प्रजातिवाद के अध्ययन में भी मानवशास्त्र विशेष रुचि लेता है।

(3) सांस्कृतिक अध्ययन :—

शारीरिक आधार पर मानव और पशुओं में अनेक समानताएँ हैं लेकिन संस्कृति ही वह महत्वपूर्ण विशेषता है जिसमें मानव पशुओं से पूर्णतया पृथक है। मानव ने अपनी विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अनेक भौतिक वस्तुओं का निर्माण किया, नयी-नयी प्रविधियों की खोज की, भाषा के आविष्कार द्वारा अनेक विचारों का दूसरे समूहों में संचारण किया तथा तरह-तरह के विश्वासों और नियमों को विकसित करके स्वयं अपने जीवन को नियंत्रित करने का प्रयत्न किया। मानव व्यवहारों की सम्पूर्णता को ही हम संस्कृति कहते है। जो मानवशास्त्र के अध्ययन क्षेत्र के

अन्तर्गत आनेवाला प्रमुख विषय है। इसका तात्पर्य है कि वे सभी भौतिक तथा अभौतिक वस्तुएँ अथवा विश्वास जिनका सृजन मानव द्वारा हुआ है, मानवशास्त्र के अध्ययन क्षेत्र में आते है। दूसरे शब्दो में मानव द्वारा विकसित उपकरण शिल्प वस्तुएँ कलात्मक वस्तुएँ, विश्वास, विचार, आर्थिक व्यवस्था, सामाजिक संगठन के प्रारूप तथा राजनैतिक व्यवस्था आदि ऐसे विषय है जो मानवशास्त्र के अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत आते है।

(4) संस्थागत व्यवहार।

प्रागैतिहासिक काल से लेकर आज तक मानव कुछ विशेष नियमों को विकसित करता रहा है जिससे व्यक्ति और समूह के जीवन को नियंत्रित किया जा सके। धार्मिक विश्वास, नैतिकता, सरकार न्याय, विवाह, परिवार, नीतियाँ, जनरीतियाँ, लोकाचार प्रथा, निषेध, कर्मकाण्ड तथा जादू आदि इसी प्रकार के विषय है। मानव केवल इन नियमों अथवा संस्थाओं को विकसित ही नहीं करता बल्कि उनके अनुसार एक विशेष ढंग से व्यवहार भी करता है। संस्थाओं द्वारा प्रभावित इन्हीं व्यवहारों को मानव के संस्थागत व्यवहार कहते है।

इस प्रकार, मानवशास्त्र मनुष्य की उत्पत्ति से लेकर आज तक उसके संबंध मे जो कुछ भी विद्यमान है उसका अध्ययन करता है। यह प्रत्येक सांस्कृतिक स्तर पर मनुष्य का सम्पूर्ण अध्ययन है।